वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 324 बुधवार 29 अप्रैल 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

संगठन की हर गतिविधि पर है 'तीसरी आंख' की नजर, अच्छा काम करने वालों को ही मिलेगा मौका: मुख्यमंत्री

भजनलाल शर्मा का अनुशासन पाठ: 'मंत्री-विधायक की शिकायत छोड़ सरकार की योजनाओं को धरातल पर ले जाएं'

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों को कड़ा अनुशासन और संगठन के प्रति समर्पण का पाठ पढ़ाया है।

मंगलवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित 'पंडित दीनदयाल प्रशिक्षण महाभियान' की प्रदेश योजना बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने उन कार्यकर्ताओं को आड़े हाथों लिया, जो अक्सर सार्वजनिक मंचों या हर जगह काम न होने की शिकायत करते रहते हैं। मुख्यमंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस तरह की बयानबाजी से न केवल संगठन की छवि धूमिल होती है, बल्कि जनता के बीच भी नकारात्मक वातावरण बनता है।

मंत्री-विधायकों की शिकायत पर किया कटाक्ष

बैठक में मौजूद जिलाध्यक्षों और पदाधिकारियों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि कार्यकर्ता अक्सर मंत्रियों और विधायकों के काम न करने की शिकायत लेकर आते हैं। उन्होंने इस पर एक व्यावहारिक टिप्पणी करते हुए कहा, आप जिस खास व्यक्ति का काम लेकर मंत्रियों के पास जाते हैं, वही व्यक्ति बाद में आपके लिए परेशानी खड़ी करता है। आप लोगों को जो दायित्व सौंपा गया है, उसे पूरी निष्ठा से संभालें। उन्होंने कार्यकर्ताओं को धैर्य रखने की सलाह देते हुए कहा कि पार्टी ने आपका चयन बहुत सोच-समझकर किया है, इसलिए समय आने पर हर निष्ठावान व्यक्ति को उसका उचित फल और पद जरूर मिलेगा। संगठन में पारदर्शिता और जवाबदेही पर जोर देते हुए मुख्यमंत्री ने एक बड़ी बात कही। उन्होंने कहा कि संगठन ने एक तरह से अदृश्य 'कैमरे' लगा रखे हैं, जो आपकी हर गतिविधि और आपके द्वारा किए जा रहे कार्यों पर नजर रख रहे हैं। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा, आपकी छवि आपके काम से ही बनेगी। जो अच्छा काम करेगा, उसे संगठन में और अधिक अवसर दिए जाएंगे। लेकिन जो काम नहीं करेगा, वह दोबारा किसी जिम्मेदारी के लिए विचार क्षेत्र में नहीं आएगा। उन्होंने जिलाध्यक्षों को निर्देश दिए कि वे प्रत्येक कार्यकर्ता के बीच काम का बंटवारा समान रूप से करें ताकि कार्यक्षमता का सही आकलन हो सके।

समाधान की जगह बात कहें, माहौल खराब न करें

मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं की नब्ज टटोलते हुए कहा कि यह अक्सर सुनने में आता है कि कार्यकर्ता हर जगह यह शिकायत करते फिरते हैं कि हमारा काम नहीं हो रहा है। उन्होंने नसीहत दी कि अपनी बात केवल वहीं कहनी चाहिए जहाँ उसका समाधान संभव हो। सीएम ने कहा, जहाँ समाधान न हो, वहाँ अपनी बात कहने का कोई लाभ नहीं है। यदि आप अपनी शिकायतों को 50 अलग-अलग जगहों पर कहेंगे, तो इससे केवल माहौल खराब होगा। हमें यह तय करना है कि हमें जनता के बीच सरकार और संगठन का कैसा वातावरण बनाना है।

प्राथमिकताओं पर सरकार की सक्रियता

मुख्यमंत्री ने अपनी सरकार की उपलब्धियां गिनाते हुए कहा कि सरकार ने कार्यभार संभालते ही प्रदेश की मूल समस्याओं—बिजली और पानी—पर मिशन मोड में काम शुरू कर दिया है। उन्होंने दावा किया कि प्रदेश की ऐसी कोई भी विधानसभा क्षेत्र नहीं है जहाँ विकास के कार्य नहीं हो रहे हों। उन्होंने कार्यकर्ताओं को याद दिलाया कि अब यह उनका नैतिक दायित्व है कि वे सरकार की इन जनहितकारी योजनाओं और उपलब्धियों को अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति (धरातल) तक पहुँचाएं। प्रशिक्षण के महत्व को रेखांकित करने के लिए मुख्यमंत्री ने अपने पुराने दिनों का एक संस्मरण साझा किया। उन्होंने बताया कि जब वे संगठन में प्रदेश महामंत्री थे और प्रशिक्षण देने के लिए सिरोही गए थे, तब उनके लिए होटल बुक किया गया था। लेकिन उन्होंने उसे ठुकरा दिया। मुख्यमंत्री के अनुसार, ''मैंने साफ कहा कि मैं यहाँ नई पीढ़ी को सीखने और सिखाने आया हूँ, सुख-सुविधाओं के लिए नहीं। उस रात मैं मंदिर के परिसर में ही सोया।'' उन्होंने कार्यकर्ताओं को संदेश दिया कि सादगी और सीखने की ललक ही एक कार्यकर्ता को नेतृत्व की ऊंचाइयों तक ले जाती है।

संगठन सर्वोपरि: पांच अध्यक्षों के साथ समन्वय का अनुभव अपने राजनीतिक सफर का हवाला देते हुए भजनलाल शर्मा ने कहा कि उन्होंने अब तक पांच अलग-अलग प्रदेश अध्यक्षों के साथ काम किया है, लेकिन कभी किसी ने उनके समन्वय पर सवाल नहीं उठाया। उन्होंने कहा, संगठन का अध्यक्ष जो भी निर्देश देता था, उसे मैंने सदैव अपनी प्राथमिकता पर रखा और पूरा किया। कार्यकर्ता को भी इसी भावना के साथ काम करना चाहिए कि उसके लिए संगठन का आदेश सर्वोपरि है।

अनुशासन ही जीत का मंत्र

मुख्यमंत्री का यह संबोधन आगामी चुनावों और सांगठनिक मजबूती के दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। उन्होंने साफ कर दिया है कि सरकार और संगठन के बीच समन्वय ही सफलता की कुंजी है। बैठक में प्रदेश पदाधिकारी, जिलाध्यक्ष और जिला संयोजकों को यह कड़ा संदेश मिल गया है कि केवल पद पर बने रहना पर्याप्त नहीं है, बल्कि प्रदर्शन ही भविष्य की राह तय करेगा।

मुलेठी के फायदे जानकर आप हैरान रह जाएंगे

मुलेठी एक ऐसी प्राकृतिक औषधि है, जिसका उपयोग आयुर्वेद में सदियों से किया जाता रहा है। आधुनिक शोधों में भी इसके कई औषधीय गुणों की पुष्टि हुई है। विशेष रूप से पेट, श्वसन तंत्र और त्वचा संबंधी समस्याओं में यह लाभकारी मानी जाती है। आयुष से जुड़ी रिपोर्ट्स के अनुसार मुलेठी में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-फंगल, एंटी-वायरल और एंटी-इंफ्लामेटरी गुण पाए जाते हैं, जो शरीर को विभिन्न संक्रमणों से बचाने में सहायक होते हैं। सर्दी के मौसम में इसका सेवन करने से खांसी और जुकाम में राहत मिल सकती है। मुलेठी केवल सर्दी-खांसी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पाचन तंत्र के लिए भी फायदेमंद है। इसके सेवन से गैस, एसिडिटी, कब्ज और पेट दर्द जैसी समस्याओं में राहत मिल सकती है। कुछ अध्ययनों में यह पाया गया है कि मुलेठी के नियमित सेवन से पाचन संबंधी समस्याओं

और हार्टबर्न में सुधार हो सकता है। इसमें पाया जाने वाला ग्लिसिरेज़िन नामक तत्व पेट के अल्सर के घाव को भरने में सहायक माना जाता है। श्वसन तंत्र के लिए भी मुलेठी उपयोगी है। यह गले और श्वास नली में जमा कफ (म्यूकस) को बाहर निकालने में मदद करती है, जिससे सांस लेने में आसानी होती है। मुलेठी की चाय पीने से गले की खराश, खांसी और अस्थमा के लक्षणों में राहत मिल सकती है। इसके अतिरिक्त, मुलेठी में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी-इंफ्लामेटरी गुण पाए जाते हैं, जो शरीर में कोशिकाओं को नुकसान से बचाने में मदद कर सकते हैं। कुछ शोधों में यह संकेत मिले हैं कि इसके कुछ तत्व कैंसर कोशिकाओं के विकास को धीमा करने में सहायक हो सकते हैं, हालांकि इस विषय पर और अधिक अध्ययन की आवश्यकता है। त्वचा के लिए भी मुलेठी लाभकारी मानी जाती है। यह ऑक्सिडेटिव स्ट्रेस को कम करने में मदद करती है और कील-मुंहासों जैसी समस्याओं में सहायक हो सकती है। मुलेठी के पाउडर का उपयोग त्वचा पर लगाने के लिए भी किया जाता है। मुलेठी की लकड़ी को पानी में भिगोकर या उसका काढ़ा बनाकर सेवन किया जा सकता है। बाजार में उपलब्ध पाउडर की तुलना में कच्ची मुलेठी अधिक प्रभावी मानी जाती है।

सावधानी

मुलेठी का सेवन सीमित मात्रा में ही करना

चाहिए। अधिक मात्रा में इसका सेवन रक्तचाप और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को प्रभावित कर सकता है, इसलिए नियमित सेवन से पहले विशेषज्ञ की सलाह लेना उचित है।

– डॉ. पीयूष त्रिवेदी
(आयुर्वेद विशेषज्ञ, एक्यूप्रेशर, जयपुर)

गंगापुर सिटी स्टेशन पर प्यास बुझाएगी 18 साल पुरानी परंपरा, 1 मई से शुरू होगी निःशुल्क जल सेवा

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया। भीषण गर्मी के बीच यात्रियों को राहत देने के उद्देश्य से दिगंबर जैन सोशल ग्रुप, गंगापुर सिटी द्वारा रेलवे स्टेशन पर संचालित निःशुल्क जल सेवा इस वर्ष भी 1 मई से प्रारंभ होकर 15 जुलाई 2026 तक जारी रहेगी। यह सेवा पिछले 18 वर्षों से निरंतर समाजसेवा का उदाहरण बनी हुई है। रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर ट्रॉलियों में रखे जलपात्र यात्रियों की सेवा के लिए तैयार हैं। इन ट्रॉलियों पर दिगंबर जैन सोशल ग्रुप गंगापुर सिटी, निःशुल्क जल सेवा, जल है तो कल है और आओ मित्र बनें जैसे प्रेरक संदेश अंकित हैं। साथ ही भगवान महावीर स्वामी का चित्र और हम बने वर्धमान का उद्घोष सेवा भावना को और सशक्त बनाता है।

सेवा की प्रमुख बातें:

सेवा अवधिः 1 मई 2026 से 15 जुलाई 2026
स्थानः गंगापुर सिटी रेलवे स्टेशन, प्लेटफॉर्म नंबर 1
संचालनः ग्रुप के पुरुष एवं महिला सदस्य तथा सामाजिक कार्यकर्ता प्रतिदिन शाम 6:00 से रात 10:00 बजे तक ट्रेनों के आगमन पर यात्रियों को शीतल जल उपलब्ध कराएंगे। इसके अलावा सुबह 8:00 बजे से नियुक्त सेवादार सेवा की जिम्मेदारी संभालेंगे।
विशेषताः यह पूर्णतः निःशुल्क सेवा है, जिसका व्यय ग्रुप के सदस्य स्वयं वहन करते हैं।

ग्रुप के अध्यक्ष नरेंद्र जैन 'नृपत्या' एवं सचिव महेश जैन ने बताया कि गर्मी में यात्रा कर रहे यात्रियों, विशेषकर बुजुर्गों और बच्चों को राहत पहुंचाना इस सेवा का मुख्य उद्देश्य है। जियो और जीने दो के सिद्धांत पर चलने वाला जैन समाज मानव सेवा को सर्वोपरि मानता है। प्रतिदिन हजारों यात्री इस सेवा से लाभान्वित होते हैं। अध्यक्ष नरेंद्र जैन 'नृपत्या' ने बताया कि कार्यकर्ताओं का प्रयास रहता है कि यात्रियों को पानी के लिए ट्रेन से नीचे न उतरना पड़े। वे खिड़कियों के माध्यम से ही बोतलों में शीतल जल उपलब्ध कराते हैं, जिससे भीड़ के बीच किसी प्रकार की असुविधा या ट्रेन छूटने का खतरा न रहे। इस सेवा में रेलवे प्रशासन का भी पूरा सहयोग प्राप्त होता है।

रमेश चंद्र गुप्ता (तुंगावाला) अंतरराष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन, राजस्थान के वरिष्ठ कार्यकारी अध्यक्ष नियुक्त

जयपुर. शाबाश इंडिया। अखिल भारतवर्षीय खंडेलवाल वैश्य महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश चंद्र गुप्ता (तुंगावाला) को अंतरराष्ट्रीय वैश्य फेडरेशन, राजस्थान का ''वरिष्ठ कार्यकारी अध्यक्ष'' नियुक्त किए जाने पर खंडेलवाल समाज में हर्ष की लहर है। समाज बंधुओं ने उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए इसे गौरव का विषय बताया है। समाज प्रतिनिधियों ने कहा कि वैश्य समाज की एकता और सशक्तिकरण के प्रति गुप्ता की अटूट निष्ठा सर्वविदित है। उनका लंबा अनुभव, संगठन के प्रति दूरदर्शिता और समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की क्षमता न केवल फेडरेशन, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणादायक है। इस अवसर पर अखिल भारतवर्षीय खंडेलवाल वैश्य महासभा के मुख्य कार्यकारी अध्यक्ष संजीव कट्टा, कार्यकारी अध्यक्ष गिरधारीलाल खंडेलवाल, कार्यालय मंत्री रामकिशोर खूंटेटा, आजीवन संरक्षक हनुमान सहाय ओढ़, कृष्ण मोहन खंडेलवाल, ललित खंडेलवाल, राकेश कूलवाल, पत्रिका प्रभारी रामस्वरूप ताम्बी, उपप्रभारी रामबाबू गुप्ता, भवन संयोजक रमेशचंद्र सौखिया, संयुक्त मंत्री नितिन खंडेलवाल (भरतपुर), महासभा के प्रधानमंत्री चंद्रप्रकाश खंडेलवाल, राष्ट्रीय युवा संयोजक

शरद फरसोईया, पत्रिका के मुख्य संपादक राम निरंजन खूंटेटा, राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो. रमेश कुमार रावत, कार्यकारी अध्यक्ष गोपाल खंडेलवाल (मथुरा), कार्यकारी अध्यक्ष गिरधारीलाल खंडेलवाल (डीग) सहित अनेक पदाधिकारियों ने उन्हें बधाई दी। इसके अतिरिक्त महासभा के पूर्व प्रधानमंत्री राकेश रावत (दिल्ली), नरेश खंडेलवाल (मंडी गोविंदगढ़), सखी-सहेली समूह की प्रमुख मधु खंडेलवाल सहित राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, झारखंड, असम, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश सहित देश के विभिन्न राज्यों एवं कोलकाता, दिल्ली, अहमदाबाद, हैदराबाद, रतलाम, मुंबई, राजनांदगांव आदि शहरों से जुड़े पदाधिकारियों, कार्यकारिणी सदस्यों और आजीवन सदस्यों ने भी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

मतभेद से मनभेद तक: जैन संस्थाओं के सामने गंभीर चुनौती

डॉ. सुनील जैन "संचय", ललितपुर

मानव समाज विचारों की विविधता से निर्मित है। जहाँ अनेक व्यक्ति होंगे, वहाँ अनेक मत होंगे। यह स्वाभाविक भी है और आवश्यक भी। भिन्न विचार ही विकास के मार्ग खोलते हैं, नई योजनाओं को जन्म देते हैं और संगठन को जीवंत बनाए रखते हैं। परंतु जब मतभेद मनभेद में बदल जाते हैं, तब वही संगठन दुर्बल होने लगता है। मतभेद स्वाभाविक हैं, मनभेद विनाशकारी। मतभेद विचारों का अंतर है, जबकि मनभेद हृदयों की दूरी है। मतभेद में संवाद जीवित रहता है, पर मनभेद में मौन, कटुता और दूरी घर कर जाती है। मतभेद व्यक्ति को सोचने पर विवश करते हैं, पर मनभेद संबंधों को तोड़ने लगते हैं। आज समाज, परिवार, संगठन और मित्रता—हर क्षेत्र में यह समस्या बढ़ती दिखाई देती है। छोटी-सी असहमति बड़े विवाद का कारण बन जाती है। लोग विचारों पर चर्चा कम और व्यक्तियों पर आक्रमण अधिक करने लगे हैं। तर्क का स्थान कटाक्ष ने ले लिया है, संवाद का स्थान आरोपों ने और सहमति की संभावना का स्थान अहंकार ने। यही कारण है कि जहां प्रेम होना चाहिए वहाँ तनाव है, जहां अपनापन होना चाहिए वहाँ दूरी है। वास्तव में मतभेद तो ज्ञान के द्वार खोलते हैं। यदि सब एक ही प्रकार सोचें, तो नई दिशा कैसे मिले? नए विचार कैसे जन्म लें? मतभेद हमें सिखाते हैं कि सत्य एकांगी नहीं, बहुआयामी होता है। दूसरों की बात सुनना, उनकी दृष्टि समझना और अपनी सीमाओं को पहचानना—यह सब मतभेदों से ही संभव होता है। किन्तु जब मतभेद के साथ अहंकार जुड़ जाता है, तब मनभेद जन्म लेते हैं। मनुष्य विचार से अधिक स्वयं को सही सिद्ध करने में लग जाता है। वह सामने वाले की बात सुनना नहीं चाहता, केवल अपनी बात मनवाना चाहता है। यहीं से संबंधों की दीवारों में दरारें पड़ने लगती हैं। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि विचार बदल सकते हैं, पर रिश्ते टूट जाएँ तो उन्हें जोड़ना कठिन होता है। किसी विषय पर असहमति हो सकती है, पर किसी व्यक्ति से घृणा क्यों? कोई हमारे मत से सहमत न हो, तो भी वह सम्मान का अधिकारी है। सभ्यता का अर्थ यही है कि हम असहमति में भी आदर बनाए रखें। आज आवश्यकता है सहिष्णुता की, सुनने की कला की और विनम्रता की। यदि हम हर मतभेद को युद्ध न मानें, बल्कि सीखने का अवसर मानें, तो अनेक मनभेद स्वतः समाप्त हो जाएँगे। हमें यह सीखना होगा कि मैं सही हो सकता हूँ, पर दूसरा भी पूर्णतः गलत नहीं हो सकता। आज यह चिंता विशेष रूप से अनेक जैन संस्थाओं में दिखाई देने लगी है। जैन समाज त्याग, संयम, अहिंसा, अनेकांत और समन्वय की महान परंपरा का वाहक है। जिस दर्शन ने संसार को अनेकांतवाद का संदेश दिया, जहाँ सत्य को बहुआयामी माना गया, जहाँ विरोध नहीं बल्कि समन्वय को महत्व दिया गया—यदि उसी समाज की संस्थाओं में कटुता, गुटबंदी और परस्पर द्वेष बढ़ने लगे, तो यह आत्ममंथन का विषय है। आज देखने में आता है कि अनेक जैन संस्थाओं में छोटे-छोटे विषय बड़े विवादों का रूप ले लेते हैं। पदों की प्रतिस्पर्धा, निर्णयों पर असहमति, व्यक्तिगत आग्रह, मान-सम्मान की अपेक्षा, पीढ़ियों के बीच संवादहीनता, और कभी-कभी स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियाँ—ये सब मतभेदों को मनभेद में बदल देती हैं। परिणाम यह होता है कि संस्था का समय समाजसेवा में कम और आंतरिक संघर्षों में अधिक व्यतीत होने लगता है। जब किसी संस्था में मतभेद बढ़ते हैं, तो सबसे पहले उसकी ऊर्जा नष्ट होती है। जो शक्ति धर्मप्रभावना, शिक्षा, संस्कार, सेवा, तीर्थ संरक्षण, युवाओं के मार्गदर्शन और समाज उत्थान में लगनी चाहिए, वही शक्ति आरोप-प्रत्यारोप में खर्च होने लगती है। नई पीढ़ी ऐसे वातावरण को देखकर संस्थाओं से दूर होने लगती है। समाज के सामान्य सदस्य भी निराश हो जाते हैं। यह स्मरण रखना चाहिए कि मतभेद होना दोष नहीं है। विचार अलग होना संगठन की स्वाभाविक प्रक्रिया है। किसी योजना पर भिन्न मत हो सकते हैं, कार्यपद्धति पर अलग दृष्टिकोण हो सकता है, नेतृत्व शैली पर प्रश्न उठ सकते हैं—परंतु इन सबका समाधान संवाद से होना चाहिए, संघर्ष से नहीं। मतभेद यदि मर्यादा में रहें तो संस्था को मजबूत करते हैं, क्योंकि वे नए विचार लाते हैं। लेकिन मनभेद संस्था को भीतर से खोखला कर देते हैं। जैन दर्शन का अनेकांतवाद हमें सिखाता है कि सत्य केवल हमारे पास नहीं है। सामने वाले के विचार में भी सत्य का अंश हो सकता है। यदि इस सिद्धांत को संस्थागत जीवन में उतार लिया जाए, तो अधिकांश विवाद समाप्त हो सकते हैं। स्याद्वाद हमें संयमित भाषा सिखाता है, और अहिंसा केवल कर्म से नहीं, वचन और विचार से भी अपेक्षित है। कटु शब्द भी हिंसा हैं, अपमान भी हिंसा है, और द्वेष भी हिंसा है। संस्था पर अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व होना चाहिए। वर्चस्व नहीं, सहभागिता होनी चाहिए। राजनीतिक जीवन में भी हम अक्सर देखते हैं कि अनेक नेता मंचों पर एक-दूसरे की तीखी आलोचना करते हैं, आरोप लगाते हैं, कटु शब्द भी बोलते हैं। चुनावी सभाओं में वे प्रतिद्वंद्वी दिखाई देते हैं, परंतु व्यवहारिक जीवन में अनेक अवसरों पर वही नेता एक साथ बैठकर चर्चा करते, भोजन करते, सुख-दुःख में सहभागी होते और औपचारिक संबंध निभाते दिखाई देते हैं। वे समझते हैं कि वैचारिक विरोध और व्यक्तिगत संबंध दो अलग विषय हैं। यदि राजनीति में यह परिपक्वता संभव है, तो धर्म और समाज की संस्थाओं में तो यह और अधिक दिखाई देनी चाहिए।

आज आवश्यकता है कि जैन संस्थाएँ कुछ मूल सूत्र अपनाएँ—

निर्णय प्रक्रिया पारदर्शी हो।

वरिष्ठों का अनुभव और युवाओं की ऊर्जा साथ चले।

पद सेवा का माध्यम बने, प्रतिष्ठा का साधन नहीं।

असहमति को सम्मानपूर्वक सुना जाए।

आलोचना के स्थान पर रचनात्मक सुझाव की परंपरा विकसित हो।

व्यक्तिगत अहंकार से ऊपर उठकर सामूहिक हित को प्राथमिकता दी जाए।

यह भी आवश्यक है कि संस्थाओं में समय-समय पर संवाद सभाएँ हों, जहाँ बिना कटुता के खुलकर विचार रखे जा सकें। यदि लोग सुने जाएँगे, तो वे टूटेंगे नहीं। यदि सम्मान मिलेगा, तो विद्रोह नहीं होगा। यदि अपनापन रहेगा, तो मतभेद भी मधुर रहेंगे।

जैन समाज का इतिहास त्यागी आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं, विद्वानों और श्रावकों की महान परंपरा से प्रकाशित है। जिन्होंने अपना जीवन समाज और धर्म के लिए समर्पित किया, उनकी विरासत को हम आपसी कलह से दुर्बल न करें। संस्थाएँ व्यक्तियों से बड़ी होती हैं, और समाज संस्था से भी बड़ा।

अतः समय की पुकार है—मतभेद रहें, क्योंकि वे विचारों को जन्म देते हैं; पर मनभेद न हों, क्योंकि वे संगठन को तोड़ देते हैं।

जैन संस्थाएँ यदि अपने मूल सिद्धांत—अहिंसा, अनेकांत, क्षमा और समन्वय—को व्यवहार में उतार लें, तो वे पुनः समाज की प्रेरणाशक्ति बन सकती हैं।

आइए संकल्प लें—

हम पद से नहीं, उद्देश्य से जुड़ेंगे।

हम व्यक्तियों से नहीं, मूल्यों से चलेंगे।

हम मतभेद रखेंगे, पर मनभेद नहीं होने देंगे।

नीलांबरी फाउंडेशन के बैनर तले अंगिका काव्य संग्रह "अपराजिता" का विमोचन संपन्न

मुंबई. शाबाश इंडिया

विक्रोली में नीलांबरी फाउंडेशन के बैनर तले अंगिका भाषा में रचित काव्य संग्रह ''अपराजिता'' का भव्य विमोचन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन रोमा झा द्वारा किया गया। यह काव्य संग्रह निकष प्रकाशन (अशोक सिंह सत्यवीर) द्वारा प्रकाशित है तथा कश्मीरा सिंह के संपादन में पाठकों तक पहुंचा है। पुस्तक में नौ कवयित्रियों—कश्मीरा सिंह, डॉ. विद्या रानी, डॉ. मीरा झा, डॉ. आभा पूर्वे, डॉ. शोभा कुमारी, रूपम झा, रोमा झा, दामिनी चौधरी और उलूपी झा—की रचनाएं शामिल हैं। सभी कवयित्रियां अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट पदों पर आसीन रह चुकी हैं। विशेष रूप से इस काव्य संग्रह में रोमा झा की रचना के साथ उनकी माता मीरा झा की रचना भी संकलित है, जो स्वयं एक विदुषी एवं साहित्यप्रेमी थीं। विमोचन समारोह में मुंबई के अंतरराष्ट्रीय शायर, कवि एवं विचारक पंडित सागर त्रिपाठी, प्रख्यात लेखक एवं चिंतक पंडित पवन तिवारी (हिडिंबा, अठ्ठन्नीवाले बाबू जी के लेखक), नंदलाल क्षितिज, कवयित्री एवं संचालिका पल्लवी रानी, रमाकांत ओझा, पत्रकार लक्ष्मीकांत कमलनयन, अमिताभ कुंदन, कृतायन पाण्डेय, वैष्णवी तिवारी तथा वरिष्ठ साहित्यकारा एवं नीलांबरी फाउंडेशन की संस्थापक अध्यक्ष डॉ. नीलिमा पाण्डेय सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के आयोजन में रोमा झा, उनके पति रमन झा, पुत्र रोमेन रमन झा एवं पुत्रवधू अंकिता त्यागी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अतिथियों के लिए उत्कृष्ट जलपान की भी व्यवस्था की गई। कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय एवं सफल रहा। अंत में रोमा झा ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

राजनीति

आशा, करुणा और मानवीय संवेदनाओं का जीवंत उत्सव

हर वर्ष 29 अप्रैल को मनाया जाने वाला विश्व इच्छा दिवस मानवता के उन कोमल स्पंदनों को अभिव्यक्त करता है, जो हमें एक-दूसरे से जोड़ते हैं। यह केवल एक दिन नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, करुणा और आशा का वैश्विक अभियान है। इसका उद्देश्य उन बच्चों के जीवन में खुशी और सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना है, जो गंभीर और जानलेवा बीमारियों से जूझ रहे हैं। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन की सच्ची सुंदरता दूसरों के चेहरे पर मुस्कान लाने में निहित है। इस प्रेरणादायी दिवस का संबंध मेक-ए-विश फाउंडेशन से है, जो दशकों से बच्चों की इच्छाएं पूरी कर उन्हें नया जीवन-विश्वास देती आ रही है। इस दिवस का इतिहास अत्यंत भावनात्मक है। वर्ष 1980 में सात वर्षीय क्रिस ग्रेसियस, जो ल्यूकेमिया से पीड़ित थे, ने पुलिस अधिकारी बनने की इच्छा जताई। स्थानीय पुलिस ने उनकी इच्छा को समझते हुए 29 अप्रैल 1980 को उन्हें एक दिन के लिए पुलिस अधिकारी बनाया। उन्हें वर्दी पहनाई गई और सम्मान के साथ वह अनुभव दिया गया। उस दिन उनके चेहरे की मुस्कान मानवता की संवेदनशीलता का प्रतीक बन गई। हालांकि कुछ दिनों बाद उनका निधन हो गया, लेकिन उनकी यह इच्छा एक वैश्विक आंदोलन की नींव बन गई। इसी घटना से प्रेरित होकर मेक-ए-विश फाउंडेशन की स्थापना हुई, जो आज दुनिया भर में लाखों बच्चों की इच्छाएं पूरी कर चुकी है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में, जब व्यक्ति अक्सर अपने स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं में उलझा रहता है, यह दिवस एक नई चेतना जगाता है। यह हमें सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हमारी इच्छाएं केवल हमारे लिए हैं, या हम दूसरों के जीवन में भी प्रकाश ला सकते हैं। आज समाज में संवेदनाओं का क्षरण दिखाई देता है और रिश्तों में औपचारिकता बढ़ रही है। ऐसे समय में यह दिवस मानवीय मूल्यों के पुनर्जागरण का अवसर प्रदान करता है। इच्छाएं मनुष्य के जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। वे केवल आकांक्षाएं नहीं, बल्कि ऊर्जा और दिशा का स्रोत हैं।

संपादकीय

महिला सशक्तिकरण : राष्ट्र की प्रगति का आधार

जब हम विकसित भारत 2047 के सपने को साकार करने की बात करते हैं, तो महिला सशक्तिकरण को केवल नैतिक या सामाजिक मुद्दा मानकर नहीं छोड़ा जा सकता। यह आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय सुरक्षा का मूलभूत स्तंभ है। देश की लगभग आधी आबादी को अगर शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक अवसरों और निर्णय लेने की प्रक्रिया से दूर रखा जाएगा, तो प्रगति अधूरी और असंतुलित रहेगी। आज की वास्तविकता

यह है कि महिला सशक्तिकरण बिना राष्ट्र की पूर्ण क्षमता अनलॉक नहीं हो सकती। महिला सशक्तिकरण का अर्थ केवल महिलाओं को अधिकार देना नहीं है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, निर्णयकर्ता और समाज के समान भागीदार बनाने की प्रक्रिया है। इसमें शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, स्वास्थ्य सेवाएं, राजनीतिक भागीदारी और सुरक्षा शामिल हैं। पितृसत्तात्मक समाज की जड़ें गहरी हैं, जहां लड़कियों को अक्सर बोझ समझा जाता है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर भेदभाव और संपत्ति अधिकारों में असमानता जैसी चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण जैसे आंकड़े बताते हैं कि विवाहित महिलाओं में घरेलू हिंसा की दर अभी भी चिंताजनक है। आर्थिक दृष्टि से क्यों जरूरी? महिलाओं की श्रम शक्ति भागीदारी दर में सुधार हो रहा है 2017-18 में लगभग 23% से बढ़कर 2023-24 में 40% के आसपास पहुंच गई है। महिला स्व-रोजगार भी बढ़ा है। लेकिन वैश्विक औसत से यह अभी काफी कम है। अध्ययनों के अनुसार, अगर महिलाएं पुरुषों के बराबर आर्थिक भागीदारी करें, तो भारत की जीडीपी में 2.9 ट्रिलियन डॉलर तक की वृद्धि संभव है। महिला उद्यमिता बढ़ने से न केवल परिवार बल्कि पूरा समुदाय मजबूत होता है। मुद्रा योजना, महिला ई-हाट, आत्मनिर्भर भारत अभियान जैसी पहलें इस दिशा में सकारात्मक कदम हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच और कौशल विकास अभी चुनौती बने हुए हैं। शिक्षा महिला सशक्तिकरण की कुंजी है। शिक्षित महिला परिवार की पहली शिक्षिका बनती है। वह बच्चों की पोषण, स्वास्थ्य और शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। लड़कियों की साक्षरता दर में सुधार हुआ है, लेकिन उच्च शिक्षा और स्टेम क्षेत्रों में ड्रॉपआउट दर और रोजगार में रूपांतरण कम है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जैसी योजनाओं ने जागरूकता बढ़ाई, लेकिन लिंग अनुपात और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर निरंतर ध्यान जरूरी है। एक शिक्षित और सशक्त महिला निर्णय लेने में सक्रिय होती है परिवार नियोजन से लेकर आर्थिक निवेश तक। सामाजिक और राजनीतिक आयाम भी कम महत्वपूर्ण नहीं। जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि महिलाओं को जागृत किए बिना जनता को जागृत नहीं किया जा सकता। जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं, तो परिवार, गांव और राष्ट्र आगे बढ़ता है। महिला आरक्षण विधेयक (नारी शक्ति वंदन अधिनियम) संसद और विधानसभाओं में 33% आरक्षण सुनिश्चित करेगा, जो लंबे समय से लंबित था।

-राकेश जैन गोदिका

परिदृश्य

लू के थपेड़ों से झुलसता देश

कांतिलाल मांडोत

देश के बड़े हिस्से में इन दिनों भीषण गर्मी ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। उत्तर, पश्चिम और पूर्वी भारत तक तापमान लगातार बढ़ रहा है, जिससे जनजीवन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। खासकर बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में स्थिति अधिक गंभीर होती जा रही है, जहां तापमान 40 से 44 डिग्री सेल्सियस के बीच पहुंच चुका है। मौसम विभाग की चेतावनियों ने लोगों की चिंता और बढ़ा दी है, क्योंकि आने वाले दिनों में हालात और विकट होने की आशंका है। बिहार में अप्रैल के महीने में ही जून जैसी तपिश महसूस की जा रही है। कई जिलों में तापमान सामान्य से 2 से 6 डिग्री अधिक दर्ज किया जा रहा है, जो मौसम के बिगड़ते संतुलन का संकेत है। बक्सर, भोजपुर, कैमूर, रोहतास, औरंगाबाद, गया, नवादा, पटना, अरवल और जहानाबाद जैसे जिलों में हीट वेव का अलर्ट जारी किया गया है। इन क्षेत्रों में तापमान 44 डिग्री तक पहुंचने और तेज लू चलने की संभावना है। दिन में बाहर निकलना जोखिम भरा हो गया है, इसलिए लोग अनावश्यक रूप से घर से बाहर निकलने से बच रहे हैं। पटना सहित कई शहरों में तापमान 41 डिग्री के पार पहुंच चुका है, जबकि बक्सर में 44.4 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। गया, डेहरी और शेखपुरा जैसे इलाकों में भी तापमान 42 डिग्री के आसपास बना हुआ है। यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रही है, खासकर बच्चों, बुजुर्गों और बीमार व्यक्तियों के लिए। उत्तर प्रदेश में भी हालात कम चिंताजनक नहीं हैं। बुंदेलखंड क्षेत्र में गर्मी का प्रकोप सबसे ज्यादा देखा जा रहा है, जहां बांदा का तापमान 43.8 डिग्री और प्रयागराज का 43.7 डिग्री तक पहुंच गया है। प्रदेश के कई जिलों में हीट वेव का अलर्ट जारी किया गया है और तापमान में लगातार वृद्धि की संभावना जताई गई है। हालांकि 26 अप्रैल के बाद एक पश्चिमी विक्षोभ के सक्रिय होने से कुछ स्थानों पर हल्की बारिश और बादल छाने की उम्मीद है, जिससे आंशिक राहत मिल सकती है। देश के अन्य हिस्सों जैसे गुजरात, महाराष्ट्र, ओडिशा और राजस्थान में भी गर्मी ने लोगों को बेहाल कर दिया है। कई शहरों में तापमान 40 डिग्री से ऊपर बना हुआ है और दोपहर के समय सड़कों पर सन्नाटा पसरा रहता है। लोग केवल अत्यंत आवश्यक कार्यों के लिए ही घरों से बाहर निकल रहे हैं। इस भीषण गर्मी का असर केवल इंसानों तक सीमित नहीं है, बल्कि पशु-पक्षी भी इससे प्रभावित हो रहे हैं। जल स्रोत सूखने लगे हैं और पक्षियों के लिए पानी की कमी बढ़ गई है। कई सामाजिक संगठन और जागरूक नागरिक पक्षियों के लिए पानी के बर्तन रखकर राहत पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं। स्वास्थ्य सेवाओं पर भी इसका दबाव बढ़ रहा है। अस्पतालों में हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और गर्मी से जुड़ी बीमारियों के मरीजों की संख्या बढ़ने लगी है। डॉक्टरों का कहना है कि इस समय सावधानी बेहद जरूरी है पर्याप्त पानी पिएं, हल्का भोजन करें और तेज धूप से बचें। विशेषज्ञों के अनुसार, जलवायु परिवर्तन इस तरह की चरम मौसम स्थितियों का प्रमुख कारण बनता जा रहा है। हर वर्ष तापमान में वृद्धि और हीट वेव की घटनाओं में इजाफा हो रहा है, जो एक गंभीर वैश्विक चुनौती का संकेत है। सरकार और प्रशासन ने कई स्थानों पर हीट एक्शन प्लान लागू किए हैं, जिनमें जागरूकता अभियान, पेयजल व्यवस्था और स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करना शामिल है। हालांकि इस चुनौती से निपटने के लिए जनसहभागिता भी उतनी ही आवश्यक है। अंततः कहा जा सकता है कि देश इस समय प्रचंड गर्मी की चपेट में है और आने वाले दिन और कठिन हो सकते हैं।

साहित्य उत्सव : एक यात्रा-वृत्तांत

यात्राएँ केवल पथ पर बढ़ते कदमों की गिनती नहीं होतीं,
वे भीतर के मौन को अर्थ देने की प्रक्रिया होती हैं।
जो आँखें देखती हैं, वह क्षणिक होता है–
पर जो मन ग्रहण करता है, वही स्थायी अनुभव बन जाता है।

हम दोनों तैयार होकर निकल पड़े। शीत ऋतु की वह सुबह अत्यंत मनोहर थी। हल्की धूप की किरणें धरती को आलोकित कर रही थीं, शीतल हवा गालों को स्पर्श कर रही थी और मार्ग के दोनों ओर फैली हरियाली मन को प्रसन्न कर रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो प्रकृति स्वयं हमारी यात्रा की सहयात्री बन गई हो।

रास्ते में रंग-बिरंगे टेडी बियर की एक दुकान दिखी। मुक्ता का मन तुरंत वहाँ ठहर गया। उसने एक बड़ा, मुलायम पांडा चुना, पर उसे साथ ले जाना संभव नहीं था। उसने विक्रेता को कुछ राशि देकर शाम तक उसे सुरक्षित रखने को कहा। उस क्षण मेरे मन में एक विचार आया–

''विश्वास भी कितना विचित्र है–कभी कुछ सिक्कों में मिल जाता है और कभी पूरी उम्र देने पर भी नहीं मिलता।''

और फिर एक हल्की मुस्कान के साथ यह भी लगा–
यदि थोड़े से मूल्य में कोई शाम तक ठहर सकता है, तो क्या अधिक मूल्य पर संबंध और लंबा ठहर सकते हैं?

कुछ ही समय बाद हम मुक्तांगन पहुँचे, जहाँ उत्सव का आयोजन हो रहा था। प्रवेश द्वार पर सुसज्जित अक्षरों में साहित्य उत्सव लिखा हुआ था। चारों ओर हरियाली, सुंदर सजावट और मधुर संगीत वातावरण को और भी आकर्षक बना रहे थे। भीतर प्रवेश करते ही ऐसा लगा मानो हम किसी साहित्यिक लोक में प्रवेश कर गए हों।

विभिन्न मंडप महान साहित्यकारों के नाम पर सुसज्जित थे– जयशंकर प्रसाद, गजानन माधव मुक्तिबोध, विनोद कुमार शुक्ल आदि। हमें मुक्तिबोध मंडप में अपनी प्रस्तुति देनी थी। मार्ग में अन्य मंडपों की झलकियाँ मन को बार-बार ठहर जाने को कहतीं, पर समय की मर्यादा हमें आगे बढ़ाती रही।

मंडप में पहुँचते ही काव्य-पाठ प्रारंभ हो चुका था। मेरा नाम पुकारा गया और मैंने मंच पर जाकर अपनी प्रस्तुति दी। श्रोताओं की तालियों और सराहना ने मन को स्पर्श किया। मुक्ता मुझे देख रही थी–
मानो मेरी हर पंक्ति उसके भीतर भी गूँज रही हो–
वह केवल दर्शक नहीं, मेरी यात्रा की साक्षी थी।

इसके पश्चात हम विभिन्न स्टॉलों की ओर बढ़े। छत्तीसगढ़ी परिधान, आभूषण और हस्तशिल्प की वस्तुएँ अत्यंत आकर्षक थीं। मैंने एक दर्पण खरीदा। दर्पण केवल चेहरा दिखाने का माध्यम नहीं, बल्कि आत्मदर्शन का प्रतीक भी है–
यह हमें बाहरी रूप के साथ-साथ भीतर झाँकने का संकेत देता है। बुक स्टॉल पर पहुँचते ही मन प्रफुल्लित हो उठा। पुस्तकों की सुगंध और ज्ञान का विस्तार वहाँ स्पष्ट अनुभव हो रहा था। मैंने राहुल सांकृत्यायन की ह्यसंस्कृति के चार अध्यायह्न खरीदी। वहाँ उपस्थित साहित्यकारों से मिलना और उनके अनुभव सुनना अत्यंत प्रेरणादायक रहा।

इसके बाद हम जयशंकर प्रसाद मंडप पहुँचे, जहाँ विभिन्न राज्यों से आए साहित्यकार अपने विचार रख रहे थे। यही इस यात्रा का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव था।

एक साहित्यकार जब बोल रहे थे, तो उनके शब्द केवल शब्द नहीं थे–वे अनुभवों की परतें खोल रहे थे। उन्होंने कथा-साहित्य की गहराइयों को इस प्रकार प्रस्तुत किया मानो हर पात्र हमारे सामने जीवित हो।

एक अन्य वक्ता ने आधुनिक समय, तकनीक और साहित्य के संबंध पर विचार रखे। उन्होंने कहा– समय बदलता है, साधन बदलते हैं, पर संवेदनाएँ वही रहती हैं; साहित्य उन्हीं संवेदनाओं का कालजयी स्वर है।

उनकी वाणी में गंभीरता के साथ एक अपनापन भी था। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे केवल मंच से नहीं, सीधे हमारे भीतर संवाद कर रहे हों। उनका हर शब्द मन की किसी परत को छूता और भीतर एक नई सोच को जन्म देता जा रहा था। मैं पूरी तन्मयता से उन्हें सुन रही थी, जबकि मुक्ता बीच-बीच में चना-चाट का आनंद ले रही थी।

उसके लिए उस क्षण का स्वाद महत्वपूर्ण था और मेरे लिए शब्दों का–यही हमारे स्वभाव का अंतर भी था और हमारी मित्रता का संतुलन भी।

धीरे-धीरे समय बीतता गया। कई मंडप अभी शेष थे, पर लौटना आवश्यक था। मन वहीं रुक जाना चाहता था, पर कदमों को लौटना ही था।

संध्या का समय था। अस्त होता सूर्य आकाश को लालिमा से भर रहा था। ठंडी हवा दिनभर की थकान को सहला रही थी। पेड़ों की छायाएँ लंबी हो गई थीं और पक्षी अपने घोंसलों की ओर लौट रहे थे।

ऐसा लग रहा था मानो प्रकृति स्वयं कह रही हो–
हर यात्रा केवल स्थानों की नहीं होती, कुछ यात्राएँ भीतर के संसार को भी विस्तृत कर जाती हैं।

भीड़ थी,
पर एकांत स्पष्ट था।
शब्द बोले जा रहे थे–
और अर्थ
चुपचाप उतर रहे थे।

-ऋचा चंद्राकर ''तत्वाकांक्षी''

डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को जनसेवक फ्लैग भेंट, उदयपुर में हुई महत्वपूर्ण मुलाकात

उदयपुर. शाबाश इंडिया

26 अप्रैल 2026 को उदयपुर स्थित सिटी पैलेस में महाराणा प्रताप के वंशज एवं मेवाड़ के महाराजा डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ से जैन समाज के राष्ट्रीय नेता विकेश मेहता की महत्वपूर्ण मुलाकात हुई। इस अवसर पर मेहता ने डॉ. मेवाड़ को ''जनसेवक फ्लैग'' भेंट किया।

मेवाड़-वागड़ क्षेत्र के इन दो युवा समाजसेवी नेताओं की यह मुलाकात प्रदेश में चर्चा का विषय बनी हुई है। मुलाकात के दौरान दोनों ने पीड़ित मानवता की सेवा, गरीबों के उत्थान और दिव्यांगजनों को संबल प्रदान करने के विषय पर गहन विचार-विमर्श किया।

बताया गया कि दोनों व्यक्तित्वों ने आने वाले समय में मेवाड़-वागड़ क्षेत्र के विकास और सामाजिक उत्थान के लिए विभिन्न योजनाओं पर भी चर्चा की।

विकेश मेहता ने जैन समाज की गतिविधियों की जानकारी देते हुए देशभर में नई शाखाओं के विस्तार की योजना से भी अवगत कराया। साथ ही वागड़ क्षेत्र में चल रही सामाजिक गतिविधियों पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

इस अवसर पर मेहता ने डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़ को जयपुर फुट केंद्र पधारने का निमंत्रण दिया तथा वागड़ क्षेत्र स्थित त्रिपुरा सुंदरी मंदिर के दर्शन हेतु भी आग्रह किया।

रिपोर्टः सुरेश चंद्र गांधी, नौगामा
(जिला बांसवाड़ा, राजस्थान)

आचार्य विशुद्ध सागर जी का प्रथम पट्टाचार्य पदारोहण दिवस 30 अप्रैल को करगुवांजी (झांसी) में मनाया जाएगा

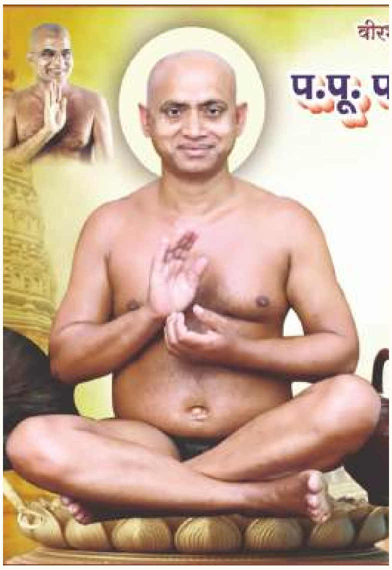

झांसी. शाबाश इंडिया। श्रमण संस्कृति के महामहिम पट्टाचार्य आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज का प्रथम पट्टाचार्य पदारोहण दिवस 30 अप्रैल 2026 को दिगंबर जैन तीर्थ करगुवांजी (झांसी) में ससंघ सानिध्य में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया जाएगा। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन ''दद्दू'' ने बताया कि इस अवसर पर ''समय देशना'' ग्रंथ के 17वें भाग का विमोचन भी किया जाएगा। देशभर में भी यह दिवस उमंग और भक्ति भाव के साथ मनाया जाएगा। मुख्य समारोह वीर भूमि झांसी स्थित दिगंबर जैन तीर्थ करगुवांजी में दोपहर 2:00 बजे से आयोजित होगा। इसमें देश के विभिन्न हिस्सों से श्रद्धालु एवं भक्तगण उपस्थित होकर आचार्य श्री के प्रति विनयांजलि अर्पित करेंगे तथा उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे। इस अवसर पर आचार्य श्री के मंगल प्रवचन भी होंगे। आयोजकों ने सकल दिगंबर जैन समाज से आह्वान किया है कि वे अधिक से अधिक संख्या में पधारकर दर्शन-वंदन एवं धर्म लाभ प्राप्त करें।

प्रार्थना: ईश्वर से संवाद का माध्यम

प्रार्थना केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि मन, आत्मा और ईश्वर के बीच एक गहरा और सच्चा संवाद है। यह वह माध्यम है, जिसके द्वारा मनुष्य अपने हृदय की भावनाएँ, आशाएँ, चिंताएँ और कृतज्ञता ईश्वर तक पहुँचाता है। जब शब्द कम पड़ जाते हैं, तब प्रार्थना हमारी अनुभूतियों को अभिव्यक्त करने का सबसे सरल और पवित्र मार्ग बन जाती है। प्रार्थना का वास्तविक अर्थ केवल कुछ माँगना नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड़ना है। यह एक ऐसा संवाद है, जिसमें हम न केवल अपनी इच्छाएँ रखते हैं, बल्कि अपने भीतर झाँकते हैं, स्वयं को समझते हैं और अपने दोषों को स्वीकार करते हैं। सच्ची प्रार्थना वही है, जिसमें अहंकार का अभाव हो और हृदय में विनम्रता तथा श्रद्धा का वास हो। जब हम प्रार्थना करते हैं, तो हमारा मन शांत हो जाता है। दिनभर की भागदौड़, तनाव और चिंताओं के बीच प्रार्थना हमें एक ऐसा ठहराव देती है, जहाँ हम स्वयं से और ईश्वर से जुड़ पाते हैं। यह हमारे मन को सकारात्मक ऊर्जा से भर देती है और हमें कठिन परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है। प्रार्थना का एक महत्वपूर्ण पक्ष कृतज्ञता भी है। हम अक्सर केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ईश्वर को याद करते हैं, जबकि सच्ची प्रार्थना वह है, जिसमें हम अपने जीवन में मिली हर छोटी-बड़ी खुशी के लिए धन्यवाद व्यक्त करें। कृतज्ञता का भाव जीवन को अधिक संतोषपूर्ण और आनंदमय बनाता है। प्रार्थना किसी विशेष भाषा, स्थान या समय की मोहताज नहीं होती। यह हृदय की सच्ची भावना है, जिसे कहीं भी, कभी भी व्यक्त किया जा सकता है। चाहे मंदिर में हों, घर में या किसी शांत कोने में—यदि मन सच्चा है, तो हर स्थान प्रार्थना का स्थान बन जाता है। अंततः, प्रार्थना हमें यह सिखाती है कि हम अकेले नहीं हैं। हमारे साथ एक अदृश्य शक्ति है, जो हर क्षण हमारा मार्गदर्शन करती है। प्रार्थना वास्तव में ईश्वर से संवाद का वह सेतु है, जो हमारे भीतर शांति, विश्वास और आत्मिक बल का संचार करता है।

अनिल माथुर
ज्वाला-विहार, जोधपुर

कामां के कवि डी.के. जैन मित्तल (टीवी फेम) ने शायरी आशु लेखन प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया

कामां. शाबाश इंडिया

''लेखक हिन्दी के'' नामक पंजीकृत साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित ''शायरी ए जुगलबंदी: आशु लेखन काव्य प्रतियोगिता'' में कामां के कवि डी.के. जैन मित्तल (टीवी फेम) ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस प्रतियोगिता में देशभर के वरिष्ठ कवियों और शायरों ने भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन संस्था के मुख्य संपादक कृष्ण चतुर्वेदी एवं कार्यकारी संपादक मधुछंदा चक्रवर्ती के निर्देशन में किया गया, जबकि संचालन दिल्ली की शायरा नेहा पंडित द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों को एक निर्धारित शब्द दिया गया, जिस पर उन्हें निर्धारित समय (एक घंटे) के भीतर त्वरित शायरी प्रस्तुत करनी थी। प्रतिभागियों की प्रस्तुतियों का मूल्यांकन आयोजक मंडल द्वारा किया गया। प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा आज सुबह की गई, जिसमें डी.के. जैन मित्तल ने अपनी उत्कृष्ट प्रस्तुति के आधार पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कवि डी.के. जैन मित्तल की इस उपलब्धि पर उनके शुभचिंतकों एवं साहित्य प्रेमियों ने उन्हें हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

फागी सहित आसपास के क्षेत्रों में जैन धरोहर दिवस के रूप में मनाई गई स्व. निर्मल कुमार सेठी की पंचम पुण्यतिथि

फागी. शाबाश इंडिया

फागी कस्बे सहित आसपास के क्षेत्रों– चकवाड़ा, चौरू, नारेड़ा, मंडावरी, मेहंदवास, निमेड़ा, लसाड़िया, लदाना एवं माधोराजपुरा– के जैन समाज ने जैन राजनैतिक चेतना मंच के राष्ट्रीय संस्थापक अध्यक्ष स्व. श्री निर्मल कुमार सेठी (बाबूजी) की पंचम पुण्यतिथि 27 अप्रैल 2026 को जैन धरोहर दिवस के रूप में मनाई। इस अवसर पर विभिन्न स्थानों पर विनयांजलि सभाओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक राजाबाबू गोधा ने मुनि सुव्रतनाथ जिनालय में आयोजित सभा में बताया कि स्व. सेठी लगभग 40 वर्षों तक श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे और उन्होंने जैन समाज को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही, जैन राजनैतिक चेतना मंच के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में उन्होंने समाज की व्यापक

सेवा की। उन्होंने बताया कि स्व. सेठी ने युवाओं को रोजगार दिलाने, जैन धर्म के प्राचीन तीर्थ, अतिशय एवं सिद्ध क्षेत्रों के संरक्षण तथा जीर्णोद्धार में उल्लेखनीय योगदान दिया। देश-विदेश में जैन प्रतिमाओं और पुरातत्व की पहचान स्थापित करने में भी उनका विशेष योगदान रहा। उनके देहावसान से जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। समाज के वरिष्ठजन मोहनलाल झंडा एवं महावीर मोदी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा की शांति के लिए भगवान महावीर से प्रार्थना की। उन्होंने आह्वान किया कि समाज उनके बताए मार्ग पर चलकर एकजुट होकर उनके सपनों को साकार करे। यह आयोजन कस्बे के आदिनाथ जिनालय, बीचला मंदिर, मुनि सुव्रतनाथ जिनालय, चंद्रप्रभु जैन नसियां, चंद्रपुरी जैन मंदिर सहित पूरे परिक्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में समाजसेवी मोहनलाल झंडा, महावीर कठमाना, कैलाश कासलीवाल, सोभाग सिंहल, हनुमान कलवाड़ा, रमेश बजाज, महावीर बजाज, पदम टीबा, जीतू कासलीवाल, नीरज झंडा, आशु झंडा, मुकेश गिंदोड़ी, लक्की झंडा, कमलेश चौधरी, राजाबाबू गोधा सहित महिला मंडल की संतरा झंडा, प्रेम देवी पंसारी, कमला कासलीवाल, शोभा झंडा, रेखा झंडा, गुणमाला झंडा, इलायची मोदी, आशा मोदी, अंजु टीबा, रिया जैन सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

रिपोर्टः राजाबाबू गोधा
मीडिया प्रवक्ता, जैन महासभा
(राजस्थान)

मुनि विनम्र सागर जी महाराज ने प्रवचन में दान के महत्व पर डाला प्रकाश

जयपुर. शाबाश इंडिया। आचार्य विद्यासागर जी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 विनम्र सागर जी महाराज ने मंगलवार को अपने त्रिवेणी प्रवास के दौरान मंगल प्रवचन में दान के महत्व पर प्रकाश डाला। मुनि श्री ने श्रीकृष्ण और अर्जुन के एक प्रसंग का उल्लेख करते हुए बताया कि एक ब्राह्मण के पास भोजन तक का अभाव था। पत्नी के कहने पर वह श्रीकृष्ण और अर्जुन के पास अपनी व्यथा लेकर गया। श्रीकृष्ण ने तुरंत अपने पास रखी रेशमी थैली से एक हजार स्वर्ण मुद्राएँ देकर उसकी सहायता की। मुनि श्री ने बताया कि मार्ग में डाकुओं ने ब्राह्मण की सारी मुद्राएँ लूट लीं। घर लौटकर जब उसने अपनी पत्नी को यह बात बताई, तो वह अत्यंत दुखी हुई। इस प्रसंग के माध्यम से उन्होंने समझाया कि यदि पूर्व जन्मों में दान किया होता, तो ऐसी परिस्थिति नहीं आती। उन्होंने कहा कि दान का वास्तविक अर्थ निस्वार्थ भाव से दूसरों की सहायता करना है, जो मानसिक शांति, आत्मसंतुष्टि और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाता है। दान न केवल जरूरतमंदों की सहायता करता है, बल्कि व्यक्ति के कर्मों को शुद्ध कर पुण्य और यश अर्जित करने का माध्यम भी बनता है। मंदिर समिति के अध्यक्ष महेंद्र काला ने बताया कि कार्यक्रम की शुरूआत संत भवन में महिला मंडल के मंगलाचरण से हुई। इस अवसर पर मंदिर समिति के मंत्री शैलेन्द्र जैन सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में महावीर कासलीवाल, राकेश छाबड़ा, लोकेश जैन, कैलाश सोगाणी, अंकुर पाटोदी, विपिन सेठ, कमल चांदवाड़, राजकुमार पांड्या, भागचंद पाटनी, राजेन्द्र पाटनी, अशोक पाटोदी, महेंद्र बाकलीवाल, अजय पांड्या, नितिन-नितेश छाबड़ा, सुनील-संजीव लुहाड़िया, प्रशांत अजमेरा, हीरा जैन, गौरव जैन, संजय सोगानी, विजय पांड्या, राजेश कुमार जैन, विनोद अजमेरा, सुशील सोगानी, मनोज टोंग्या, नवीन बज, नीलकमल पांड्या सहित महिला मंडल की बबीता लुहाड़िया, मृदुला काला, मनोरमा चांदवाड़, वंदना अजमेरा, अंजू अजमेरा, आशा बज, एकता पांड्या, मीनू रारा, निरंजना जैन, नीतू जैन, सीमा बाकलीवाल, सुनीता कासलीवाल, उर्मिला छाबड़ा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। शाम को शंका समाधान का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। बुधवार प्रातः मुनि श्री ससंघ मीरा मार्ग जैन मंदिर के लिए प्रस्थान करेंगे।

आईएएस रवि जैन द्वारा "विश्व श्रमिक दिवस" पोस्टर का विमोचन

जयपुर. शाबाश इंडिया। महिला एवं बाल विकास को समर्पित संस्था ''वूमेन पावर सोशलिटी फाउंडेशन'' द्वारा आयोजित होने वाले 'विश्व श्रमिक दिवस' सम्मान समारोह के पोस्टर का विमोचन आज गरिमामय वातावरण में आईएएस रवि जैन, सचिव, स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर द्वारा किया गया। इस अवसर पर संस्था के प्रदेश अध्यक्ष जिनेश कुमार जैन ने बताया कि 1 मई 2026 को आयोजित यह कार्यक्रम श्रमिकों के सम्मान और उनके योगदान को समर्पित है। उन्होंने कहा कि समाज के निर्माण में श्रमिक वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और उन्हें सम्मान देना हम सभी का दायित्व है। कार्यक्रम के आयोजन में सार्क इंडिया मोदी ग्रुप की विशेष सहभागिता और सहयोग भी उल्लेखनीय है। संस्था द्वारा सामाजिक सरोकारों से जुड़े विभिन्न अभियानों में सार्क इंडिया का निरंतर योगदान सराहनीय रहा है, जिससे आयोजन को और अधिक मजबूती मिली है। पोस्टर विमोचन के दौरान उपस्थित पदाधिकारियों ने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज में श्रमिकों के प्रति सम्मान और जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस मौके पर संस्था की मुख्य राष्ट्रीय अध्यक्ष राजरानी, प्रदेश उपाध्यक्ष संध्या राठौड़, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य एवं समाजसेविका संतोष जैन तथा साक्षी मीरवाल भी मौजूद रहे। यह कार्यक्रम ध्रुव बाल निकेतन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, आमेर रोड, जयपुर में अपराह्न 1 बजे से 4 बजे तक आयोजित किया जाएगा, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों के श्रमिकों को सम्मानित किया जाएगा। इस आयोजन में रिम्पू फाउंडेशन, जयपुर का विशेष सहयोग रहेगा। अंत में जिनेश कुमार जैन ने समाजसेवियों, संगठनों एवं आमजन से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाने का आह्वान किया।

काव्य और सम्मान की त्रिवेणी से सजी साहित्यिक संध्या

बरेली. शाबाश इंडिया। रचनात्मक लेखन मंच न्यास (वाराणसी) की बरेली उपशाखा द्वारा कोटक लाइफ के सहयोग से एक भव्य कवि सम्मेलन, मुशायरा एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कोटक लाइफ कार्यालय में आयोजित इस गरिमामयी कार्यक्रम की अध्यक्षता मशहूर शायर विनय सागर जायसवाल ने की, जबकि कवयित्री विनीता सिसोदिया के कुशल मार्गदर्शन और सहयोग ने आयोजन को सफल बनाया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में कवि हिमांशु श्रोत्रिय 'निष्पक्ष' और विशिष्ट अतिथि के रूप में शायरा सत्यवती सिंह 'सत्या' उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ हास्य कवि मनोज दीक्षित 'टिंकू' द्वारा प्रस्तुत माँ शारदे की वंदना से हुआ, जबकि संचालन कवि रोहित राकेश ने अपने चिर-परिचित अंदाज में किया। इस अवसर पर पूर्व आईजी डॉ. राकेश सिंह के कविता संग्रह 'हटकर' पर गहन विचार-विमर्श हुआ और उनकी चुनिंदा कविताओं का पाठ किया गया। काव्य गोष्ठी में लोटा मुरादाबादी, दीपक मुखर्जी, गजराज, कमल श्रीवास्तव, फईम करार, और अमन बरेलवी सहित तीन दर्जन से अधिक रचनाकारों ने अपनी लेखनी से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। सम्मान की कड़ी में संस्था एवं कोटक लाइफ द्वारा अध्यक्ष विनय सागर जायसवाल को शाल, प्रतीक चिह्न और उपहार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही, उपस्थित सभी कवियों और शायरों को भी स्मृति भेंट प्रदान की गई। यह आयोजन बरेली के साहित्यिक गलियारों में अपनी सतरंगी छटा बिखेरने में सफल रहा।

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

हमारी श्रद्धेय

श्रीमती गुणमाला देवी

धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री मोहन लाल जी गंगवाल (साड़ी घर वाले)

के देवलोकगमन पर हम सभी

भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

श्रद्धावनत

मंजू- कमल ठोलिया, ममता- मनोज शाह, समता -राकेश गोदिका (शाबाश इंडिया) (पुत्री दामाद), अमन- हिमानी ठोलिया, सक्षम- आरूषि, ईशान (दोहिता दोहिता वधु), गुंजन- जयेश जैन, रचिता- सिद्धार्थ खूंटेटा, आयुषी- कार्तिकेय काला (दोहिती दामाद)

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

हमारी श्रद्धेय

श्रीमती गुणमाला देवी

धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री मोहन लाल जी गंगवाल (साड़ी घर वाले)

के देवलोकगमन पर हम सभी

भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते है।

श्रद्धावनत

प्रदीप कुमार - नीलिमा , शुभम-राशि, गनाक्षी जैन. सुरूचि-राहुल सोनी, यामिनी- हर्ष जैन, मैना देवी, मुकेश- संगीता, मनोज -अनीता, मनन-श्रुति, भव्य, वैदिश सोगानी, शीला-सुधीर पाटनी, यामिनी- अंकुश बड़जात्या, सुहानी-अमन बड़जात्या

विजय कुमार-कांता देवी, राजेश-सपना बड़जात्या. दर्शन-विनीता बस्सीवाला

वर्धमान स्तोत्र दीप अर्चना का भव्य आयोजन, भक्ति, संगीत एवं श्रद्धा से सराबोर रहा

जयपुर. शाबाश इंडिया। महेश नगर स्थित दिगंबर जैन मंदिर सोमवार की शाम अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा से आलोकित हो उठा, जब वर्धमान स्तोत्र दीप अर्चना का आयोजन भक्ति और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। दिगंबर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन जयपुर रीजन एवं दिगंबर जैन सोशल ग्रुप सम्यक के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम ने श्रद्धालुओं को भावविभोर कर दिया। सायं 8 बजे प्रारंभ हुए आयोजन का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। इस अवसर पर पुण्यार्जक परिवार—श्रीमती प्रेम देवी जैन, नवलझसुनीता जैन तथा सुनीलझशिल्पी जैन (श्रीमाल परिवार)—ने सहभागिता निभाई। दीपों की उजास से वातावरण में श्रद्धा की दिव्य आभा फैल गई। इसके पश्चात राजस्थान जैन सभा द्वारा आयोजित बाल भाषण प्रतियोगिता के प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए, जिससे बच्चों का उत्साह देखते ही बन रहा था। कार्यक्रम का सबसे आकर्षक क्षण तब आया, जब पंडित प्रकाश जैन की संगीतमय प्रस्तुति ने मंदिर परिसर को भक्तिमय बना दिया। मधुर भजनों की स्वर लहरियों पर श्रद्धालु भाव-विभोर होकर मण्डल में दीप अर्चना करते हुए झूम उठे—यह दृश्य सभी के हृदय को स्पर्श कर गया। इस अवसर पर फेडरेशन के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष यशकमल अजमेरा, अतिरिक्त महासचिव एवं पूर्व रीजन अध्यक्ष राजेश बड़जात्या, वर्तमान अध्यक्ष सुनील बज, कोषाध्यक्ष प्रमोद सोनी, सुरेश (बांदीकुई), पदम भावसा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। साथ ही गुलाबी नगर ग्रुप की अध्यक्ष सुशीला बड़जात्या, महासचिव महावीर पंड्या तथा नवकार ग्रुप के अध्यक्ष मोहनलाल गंगवाल की गरिमामयी उपस्थिति ने आयोजन की शोभा बढ़ाई। राजस्थान जैन सभा के महासचिव मनीष वेद, राखी जैन एवं अनिल छाबड़ा ने प्रमाण पत्र वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्यक ग्रुप के अध्यक्ष डॉ. इन्द्र कुमार जैन, सचिव नवलझसुनीता जैन, कोषाध्यक्ष मुकेशझकल्पना शाह, संस्थापक अध्यक्ष महावीरझलक्ष्मी बोहरा सहित अनेक सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया। मंदिर प्रबंधकारिणी समिति के मंत्री पीयूष जैन, महेंद्र जैन, सुरेंद्र सोगानी, पदमचंद जैन, वीरेन्द्र जैन एवं वीरेंद्र काशलीवाल सहित अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति भी रही। कार्यक्रम का सफल संयोजन नवल जैन ने किया, जबकि मंच संचालन डॉ. इन्द्र कुमार जैन ने प्रभावशाली ढंग से किया। अंत में रीजन अध्यक्ष सुनील बज ने सभी अतिथियों एवं श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया। यह आयोजन न केवल भक्ति का संगम था, बल्कि सामाजिक एकता, संस्कृति और आध्यात्मिकता का जीवंत उदाहरण भी बनकर सामने आया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक–ईपेपर '**शाबाश इंडिया**' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई–मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादक: राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

भक्ति और समरसता का पावन संगम

श्री श्री विशेश्वर नाथ मंदिर का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न

उत्तरपाड़ा माखला. शाबाश इंडिया

जब भक्ति की पावन धारा जनमानस के हृदय से प्रवाहित होती है, तो संपूर्ण वातावरण शिवमय हो उठता है। माखला स्थित श्री श्री विशेश्वर नाथ मंदिर में आयोजित वार्षिकोत्सव में आस्था का ऐसा ही अद्भुत दृश्य देखने को मिला। मंदिर के गर्भगृह में विराजमान देवाधिदेव महादेव, माँ दुर्गा और हनुमान जी की दिव्य प्रतिमाओं के दर्शन से श्रद्धालु भावविभोर हो उठे। इस आध्यात्मिक संगम में शिव का वैराग्य, दुर्गा की शक्ति और हनुमान जी की भक्ति का अद्भुत सामंजस्य दिखाई दिया। आचार्य पंडित अरविंद तिवारी के नेतृत्व में वैदिक मंत्रोच्चार और हवन का आयोजन हुआ। हवन कुंड से उठती आहुतियों की सुगंध ने पूरे वातावरण को आध्यात्मिक ऊर्जा से भर दिया। इस अवसर पर सामाजिक सौहार्द का सुंदर उदाहरण भी देखने को मिला, जब विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े जनप्रतिनिधियों ने एक साथ मंदिर में मत्था टेककर एकता का संदेश दिया। कार्यक्रम में लक्ष्मी नारायण सिंह, मुन्ना सिंह, ओमप्रकाश सिंह, अनिल सिंह मास्टर, अनिल कुलश्रेष्ठ, विमल केजरीवाल, विजय कुमार सोमानी, गौरीशंकर मुंद्रा एवं ए.के. पाणिग्रही सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित रहे। मंदिर के अध्यक्ष उदयभान सिंह, सचिव नवीन पाठक एवं कोषाध्यक्ष राधेश्याम सिंह के मार्गदर्शन में आयोजित यह उत्सव उस समय और भी भव्य हो उठा, जब विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। हजारों श्रद्धालुओं ने अनुशासित ढंग से प्रसाद ग्रहण किया। सेवा भाव से ओतप्रोत इस आयोजन में कंचन सिंह, नीलम सिंह, पुष्पा सिंह, सोनी सिंह और जूही सिंह सहित महिला मंडल की सक्रिय भागीदारी सराहनीय रही। इसके साथ ही झुना राय, अनिल सिंह, बृजकिशोर पांडे, तहसीलदार सिंह, संजय सिंह, श्रीप्रकाश सिंह, दिलीप मिश्रा, पवन शुक्ला, रमेश पांडे, रंग बहादुर सिंह, कमलेश सिंह, सत्यदेव शुक्ला, नवल सिंह, कृष्णदेव शुक्ला, ओमप्रकाश चौधरी,

गोपालकृष्ण ओझा, नीरज ओझा, कामाख्या सिंह, शैलेंद्र सिंह, अजय सिंह, काशी, शंकर, अभिषेक सिंह, अभिजीत सिंह, दिग्विजय सिंह, रोहित गुप्ता, तरकेश्वर सिंह, सचिन पांडे, मनोज सिंह, आशीष सिंह, नंदलाल व्यास, आनंद मिश्रा, जयप्रकाश, पंडित आत्मा प्रकाश पांडेय और बिनय तिवारी सहित सभी कार्यकर्ताओं ने अपनी सेवाओं से आयोजन को सफल बनाया। भक्ति, शक्ति और सेवा का यह संगम देर रात तक श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बना रहा। संपूर्ण क्षेत्र शिव आराधना और शक्ति उपासना के उल्लास में डूबा नजर आया। माखला की गलियों में आज भी उस भक्तिमय संध्या की गूंज सुनाई दे रही है। श्री श्री विशेश्वर नाथ मंदिर का यह उत्सव केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि सामूहिक श्रद्धा, एकता और विश्वास का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया।

डॉ. रवि जिंदल को थाईलैंड में "भारत गौरव अवॉर्ड" से सम्मानित किया गया

जयपुर/निवाणा. शाबाश इंडिया। ऑल इंडिया टेंट डेकोरेटर वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष रवि जिंदल को थाईलैंड के बैंकॉक स्थित होटल हॉलिडे इन में आयोजित अंतरराष्ट्रीय समारोह में ''भारत गौरव अवॉर्ड'' (गोल्ड मेडल एवं प्रशस्ति पत्र) से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 27 अप्रैल 2026 को ऑर्गेनाईजेशन फॉर कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज फोरम तथा एसोसिएशन फॉर इकोनॉमिक ग्रोथ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इंडो-थाई फ्रेंडशिप एशिया समिट के दौरान प्रदान किया गया। इस अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में उन भारतीयों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने स्टार्टअप से लेकर अब तक व्यावसायिक एवं सामाजिक क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की हैं। समारोह में थाईलैंड के प्रख्यात विद्वान प्रोफेसर डॉ. क्रिएंगसाक चारोनवोंगसाक ने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर रहे भारतीय प्रतिभागियों को सम्मानित किया। गौरतलब है कि डॉ. रवि जिंदल भारत के उन सात चयनित व्यक्तियों में शामिल हैं, जिन्हें इस प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। डॉ. जिंदल को पूर्व में भी डॉक्टरेट की उपाधि एवं अटल अचीवमेंट अवॉर्ड सहित कई सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। उनके इस सम्मान पर उनके गृह क्षेत्र ग्राम निवाणा सहित विभिन्न स्थानों पर हर्ष व्यक्त किया गया और उन्हें मिठाई खिलाकर बधाई दी गई।

अजमेर में जैन धरोहर दिवस मनाया गया

अजमेर (रोहित जैन)

श्री भारतवर्षीय दिगंबर जैन महासभा, अजमेर के संभाग महामंत्री कमल गंगवाल एवं संभाग संयोजक संजय कुमार जैन ने बताया कि धर्मवत्सल एवं सेवाभावी स्व. श्री निर्मलकुमार जैन सेठी की पंचम पुण्य स्मृति पर आज अजमेर संभाग में जैन धरोहर दिवस मनाया गया। इस अवसर पर संभाग के सभी जिन मंदिरों, नसियांजी, तीर्थ क्षेत्रों एवं कॉलोनियों स्थित मंदिरों में धर्मावलंबियों द्वारा विनयांजलि सभाएं आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। महासभा के विकास बड़जात्या एवं कमल गंगवाल ने बताया कि स्व. सेठी ने देशभर के प्राचीन एवं पुरातात्विक जैन मंदिरों के जीर्णोद्धार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका उद्देश्य जैन धर्म के प्राचीन जिनालयों, संस्कृति एवं सभ्यता का संरक्षण और संवर्धन करना था, ताकि आने वाली पीढ़ियां जैन धर्म के मूल सिद्धांतों को सहजता से समझ सकें। पंचायत गोधा का धड़ा स्थित नसियांजी में आयोजित विनयांजलि सभा में इंदरचंद गोधा, कमल गंगवाल, विकास बड़जात्या, संजय कुमार जैन, महिला संभाग अध्यक्ष स्नेहलता पाटनी, चंद्रा सेठी, पुष्पा बड़जात्या, सुनीता बाकलीवाल, मंजूला सेठी, शशि गोधा, निर्मला जैन सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अनंत अंबानी ने कोलंबिया से 80 दरियाई घोड़ों को बचाने की अपील की, "वनतारा" में आजीवन आश्रय का प्रस्ताव

जामनगर (गुजरात). शाबाश इंडिया

अनंत अंबानी ने कोलंबिया सरकार से मैग्डालेना नदी घाटी में रहने वाले 80 दरियाई घोड़ों (हिप्पो) को मारने के आदेश पर पुनर्विचार करने की अपील की है। उन्होंने इन जानवरों को सुरक्षित रूप से स्थानांतरित कर गुजरात के जामनगर स्थित वनतारा में आजीवन आश्रय देने का प्रस्ताव रखा है। बताया गया है कि कोलंबिया में दरियाई घोड़ों की संख्या 200 से अधिक हो चुकी है, जिससे स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र और अन्य जीवों पर खतरा बढ़ गया है। इस स्थिति के समाधान के लिए वहां 80 हिप्पो को मारने का निर्णय लिया गया है। अनंत अंबानी ने कोलंबिया की पर्यावरण मंत्री आइरीन वेलेज टोरेस को लिखे पत्र में मानवीय विकल्प प्रस्तुत करते हुए कहा कि इन जानवरों को वैज्ञानिक और सुरक्षित तरीके से पकड़कर स्थानांतरित किया जा सकता है। उन्होंने कोलंबियाई अधिकारियों की निगरानी और मंजूरी के साथ पूरी तकनीकी एवं लॉजिस्टिक सहायता देने की पेशकश की है। उन्होंने कहा, ''ये दरियाई घोड़े संवेदनशील जीव हैं, जो बदलती परिस्थितियों का शिकार बने हैं। यदि हमारे पास उन्हें सुरक्षित और मानवीय तरीके से बचाने की क्षमता है, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम ऐसा करें।'' वनतारा द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव में विशेषज्ञ पशु-चिकित्सकों की टीम, सुरक्षित परिवहन व्यवस्था, बायो-सिक्योरिटी प्रोटोकॉल और प्राकृतिक आवास जैसा वातावरण उपलब्ध कराने की विस्तृत योजना शामिल है। अनंत अंबानी ने यह भी कहा कि ''करुणा और पर्यावरण संरक्षण एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। वैज्ञानिक और योजनाबद्ध दृष्टिकोण से हम समुदायों और प्रकृति की रक्षा करते हुए वन्यजीवों को भी सुरक्षित रख सकते हैं।'' वनतारा ने अनुरोध किया है कि इस वैकल्पिक योजना पर विचार होने तक दरियाई घोड़ों को मारने के निर्णय को स्थगित रखा जाए। साथ ही, संस्था ने कोलंबिया सरकार के साथ सीधे समन्वय कर विस्तृत वैज्ञानिक और संचालन संबंधी प्रस्ताव प्रस्तुत करने की तत्परता जताई है। गौरतलब है कि यह पहल वनतारा के मूल सिद्धांत ''हर जीव अमूल्य है'' को दर्शाती है और वैश्विक स्तर पर वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका को भी रेखांकित करती है।

गुरुकुलम सैनिक स्कूल में विधिक जागरूकता शिविर आयोजित, बच्चों को अधिकारों व सुरक्षा की दी जानकारी

रावतसर (नरेश सिगची). शाबाश इंडिया

जखड़ावाली स्थित गुरुकुलम सैनिक स्कूल (18 एसपीडी) में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, हनुमानगढ़, बाल कल्याण समिति (सीडब्ल्यूसी) हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर के संयुक्त तत्वावधान में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्देश्य विद्यार्थियों को उनके अधिकारों, सुरक्षा और विभिन्न अपराधों से बचाव के प्रति जागरूक करना था। शिविर के दौरान विद्यार्थियों को साइबर अपराध, बाल श्रम, बाल विवाह, बाल भिक्षावृत्ति तथा बाल अपराधों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी विस्तारपूर्वक दी गई। साथ ही यह भी बताया गया कि आपात या कठिन परिस्थितियों में वे किस प्रकार कानूनी सहायता प्राप्त कर सकते हैं। कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के एडीजे गजेंद्र सिंह तेनगुरिया, सीडब्ल्यूसी हनुमानगढ़ के बेंच मजिस्ट्रेट जितेंद्र गोयल, श्रीगंगानगर सीडब्ल्यूसी के बेंच मजिस्ट्रेट जोगेंद्र कौशिक, सीडब्ल्यूसी सदस्य प्रेमचंद शर्मा, डॉ. रामप्रकाश शर्मा, चाइल्ड हेल्पलाइन कोऑर्डिनेटर त्रिलोक वर्मा, एडीआर कार्यालय हनुमानगढ़ से मयंक ओझा, गंगानगर एडीआर प्रतिनिधि सद्दाम हुसैन, विद्यालय की प्राचार्य श्रीमती देवेंद्र महल तथा गुरुकुलम प्रभारी राजेश कुमार सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे। एडीजे गजेंद्र सिंह तेनगुरिया ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मोबाइल फोन का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करने की सलाह दी और साइबर अपराधों के बढ़ते खतरे से सावधान रहने का संदेश दिया।

।। तीये की बैठक ।।

हमारी पूजनीय माताजी

श्रीमती गुणमाला देवी

(धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी गंगवाल - साड़ी घर, पचार वाले)
का आकस्मिक निधन मंगलवार, 28 अप्रैल 2026 को हो गया है।

दिवंगत आत्मा की शांति के लिए तीये की बैठक आगामी **गुरूवार, 30 अप्रैल 2026** को प्रातः 9:00 बजे आयोजित की जाएगी।

स्थान : तोतूका भवन, भट्ठारक जी की नसियां, नारायण सिंह सर्किल, जयपुर।

शोकाकुल

अशोक -अनिला, दिनेश - संगीता, राजेश - सुनीता , (पुत्र - पुत्र वधु) नरेंद्र, दिलीप, राजेंद्र, विनोद, (देवर, भतीजे) मंजू - कमल ठोलिया , ममता -मनोज शाह , समता -राकेश गोदिका (पुत्री दामाद) अंशुल - रूबी, अंचल - शेफाली, रचित - आकांक्षा, समकित - गरिमा (पौत्र - पौत्र वधु) श्रुति- मनन सोगानी,राशि - शुभम पाटोदी (पौत्री दामाद) , अमन - हिमानी ठोलिया, सक्षम - आरुषि, ईशान (दोहिता दोहिता वधु) गुंजन - जयेश जैन , रचिता - सिद्धार्थ खूंटेटा, आयुषी - कार्तिकेय काला (दोहिती दामाद) दिविज्ञा , अयांश, वर्णिका, वैदानिका, हरित, गर्विक, गुनाकीर्ति (पड़ पौत्र - पौत्री) एवं समस्त गंगवाल परिवार पचार वाले एवं समस्त गंगवाल परिवार

पीहर पक्षः किशोर, मनोज एवं समस्त कासलीवाल परिवार दांता वाले

विश्व नृत्य दिवस पर जवाहर कला केन्द्र में कथक-लोक नृत्य की भव्य प्रस्तुति

जयपुर. शाबाश इंडिया। विश्व नृत्य दिवस के अवसर पर जवाहर कला केन्द्र एवं जयपुर कथक केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में 28 अप्रैल 2026 को रंगायन सभागार में भव्य नृत्य प्रस्तुति का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में दर्शकों की उल्लेखनीय उपस्थिति रही। इस विशेष प्रस्तुति में कथक एवं राजस्थानी लोकनृत्य का आकर्षक मांड-फ्यूजन प्रस्तुत किया गया। विमुक्ति एनजीओ के विद्यार्थियों तथा जयपुर कथक केन्द्र के छात्रों ने अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का नृत्य निर्देशन चेतन कुमार जवड़ा एवं सिमरन अग्रवाल ने किया। प्रस्तुति में पारंपरिक कथक और राजस्थानी लोकनृत्य भवाई की मनमोहक झलकियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। लाइव संगीत ने कार्यक्रम को और अधिक सजीव बना दिया। इसमें गायन पर रमेश मेवाल एवं खुशी कथक, पखावज पर प्रवीण आर्य, तबला पर मोहित कथक, सितार पर अमरुद्दीन खान तथा खड़ताल पर लकी राणा ने संगत दी। पढ़ंत का संयोजन चेतन कुमार जवड़ा एवं सिमरन अग्रवाल द्वारा किया गया। कार्यक्रम का समापन कथक और लोकनृत्य के अद्भुत संगम के रूप में प्रसिद्ध गीत 'केसरिया बालम' पर भव्य प्रस्तुति के साथ हुआ, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा। यह आयोजन भारतीय नृत्य कला की विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सफल रहा।

ध्रुव कुमार कविया होंगे राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026 में विशिष्ट अतिथि

उदयपुर. शाबाश इंडिया। झीलों की नगरी उदयपुर में राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं बाल विकास आयोग ट्रस्ट द्वारा प्रताप गौरव केंद्र के कुम्भा सभागार में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय गौरव पुरस्कार 2026 कार्यक्रम में राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग, राजस्थान सरकार के सदस्य ध्रुव कुमार कविया विशिष्ट अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। इस अवसर पर ध्रुव कुमार कविया ने कार्यक्रम के पोस्टर का अनावरण किया। संस्था के चेयरमैन गोविंद जांगिड़ ने उन्हें कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी देते हुए औपचारिक रूप से आमंत्रित किया। आयोजन 17 मई 2026 को आयोजित किया जाएगा, जिसमें संस्था द्वारा गोद लिए गए 11 निराश्रित बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए विशेष पहल की जाएगी। साथ ही विभिन्न राज्यों से चयनित 31 सेवाभावी व्यक्तित्वों को उनके उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया जाएगा। जानकारी के अनुसार इस भव्य कार्यक्रम में 12 से अधिक राज्यों के प्रतिभागी भाग लेंगे। पोस्टर विमोचन के दौरान गोविंद जांगिड़, सुरेश जोशी, रोहित गुर्जर, यशवंत मेनारिया सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित रहे।

अंतरात्मा से ही परमात्मा बन सकते हैं: सिद्धांत चक्रवर्ती वैज्ञानिक धमार्चार्य कनक नंदी गुरुदेव

भिलुड़ा/बांसवाड़ा. शाबाश इंडिया। शिवगौरी आश्रम (भिलुड़ा) से आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबीनार में सिद्धांत चक्रवर्ती वैज्ञानिक धमार्चार्य कनक नंदी जी गुरुदेव ने आत्मज्ञान और सम्यक दर्शन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अंतरात्मा के जागरण से ही मनुष्य परमात्मा बन सकता है। उन्होंने कहा कि ''पहले ज्ञान प्राप्त करें, फिर दया का पालन करें।'' मोहग्रस्त जीव की गति, मति और क्रियाएं विपरीत हो जाती हैं। बहिरात्मा स्वयं को देह मानकर काला-गोरा, सुंदर-कुरूप जैसे भेदों में उलझा रहता है, जो मिथ्यात्व का कारण है। निश्चय दृष्टि से शरीर को 'मैं' मानना भ्रम है, जबकि व्यवहार दृष्टि से सम्यक दृष्टि वाला व्यक्ति शरीर की उचित देखभाल करता है। गुरुदेव ने कहा कि आत्मा में अनंत गुण विद्यमान हैं और स्वयं को जानना ही आत्मा का महानतम गुण है। आत्म-श्रद्धा के साथ किए गए दया, करुणा और दान के कार्य अनेक गुना फल देते हैं। उन्होंने बताया कि संसार का मूल कारण मिथ्यात्व है और शरीर को 'मैं' मानना सबसे बड़ा भ्रम है। उन्होंने आगे कहा कि ''जो मनुष्य सम्यक दर्शन से रहित है, वह वर्षों तक तपस्या करने पर भी परमात्मा नहीं बन सकता।'' अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार और दुर्व्यवहार जैसे सभी पाप शरीर को 'मैं' मानने की भावना से ही उत्पन्न होते हैं। गुरुदेव ने यह भी कहा कि देव दर्शन वास्तव में निज दर्शन है और प्रत्येक जीव द्रव्य रूप से एक ही है। ''मैं ही परमात्मा हूं'' यह विश्वास सम्यक दर्शन के साथ अंतर्मन में जागृत होता है। अपने उत्थान के लिए स्वयं पर विश्वास करना ही अंतरात्मा का जागरण है। कार्यक्रम की शुरूआत मुनि श्री सुविज्ञ सागर जी द्वारा आचार्य श्री रचित कविता ''आओ धीरे-धीरे चेतन एकत्व भाव में'' के मंगलाचरण से हुई। कार्यक्रम की जानकारी विजयलक्ष्मी गोदावत (सागवाड़ा) ने दी।

रिपोर्ट: अजीत कोठिया, डडूका (बांसवाड़ा, राजस्थान)

स्व. ऋषभ जैन की 17वीं पुण्य स्मृति पर असहाय बच्चों के साथ बांटी खुशियां

जयपुर. शाबाश इंडिया। जैन सोशल ग्रुप मेट्रो जयपुर के संस्थापक अध्यक्ष एवं समाजसेवी विनोद-दीपिका जैन कोटखावदा के सुपुत्र, होनहार सीए छात्र स्व. ऋषभ जैन की 17वीं पुण्य स्मृति पर मंगलवार को विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं मानव सेवा कार्य कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। ऋषभ सेवा संस्थान, जैन सोशल ग्रुप मेट्रो एवं संगिनी फोरम जेएसजी मेट्रो के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत देवी नगर स्थित पहल संस्था के शिक्षण केंद्र में असहाय एवं निर्धन बच्चों को स्टेशनरी, कॉपियां, फल एवं बिस्कुट वितरित किए गए। इसके साथ ही तरुछाया नगर स्थित श्री पुरुषोत्तम मेमोरियल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित ''लाडो परिया बालिका गृह'' में रह रही बालिकाओं के साथ समय बिताकर उनकी सेवा-सुश्रुषा की गई और आवश्यक सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम के दौरान तीन बार णमोकार महामंत्र के उच्चारण के पश्चात बच्चों को सामग्री वितरित की गई। ऋषभ सेवा संस्थान की ओर से सहयोग राशि भी भेंट की गई। सामग्री पाकर बच्चों के चेहरों पर खुशी झलक उठी। इस अवसर पर विनोद-दीपिका जैन कोटखावदा, अंकित बाकलीवाल, संगिनी फोरम जेएसजी मेट्रो की अध्यक्ष रेखा पाटनी, पूर्व अध्यक्ष मैना गंगवाल, संयुक्त सचिव नीतू जैन (मुल्तान), पहल संस्था की पूजा कूलवाल, कुसुम साखूनिया, दिव्या बाकलीवाल, अनिता लुहाड़िया, ज्योति जैन, आस्था लुहाड़िया, तनिषा लुहाड़िया, देवांश बाकलीवाल सहित बड़ी संख्या में सामाजिक कार्यकर्ता एवं परिवारजन उपस्थित रहे। रात्रि में सूर्यनगर स्थित कोटखावदा हाउस में विश्व शांति हेतु णमोकार महामंत्र एवं भक्तामर स्तोत्र का सामूहिक पाठ किया गया।

भावभीनी श्रद्धांजलि

"धर्म-प्राण, मुनि-भक्त एवं वात्सल्य की प्रतिमूर्ति"

अत्यंत भारी मन के साथ हम अपनी आदरणीय माताजी

श्रीमती गुणमाला देवी गंगवाल

(धर्मपत्नी स्वर्गीय श्री मोहनलाल जी गंगवाल - साड़ी घर वाले)

के आकस्मिक निधन पर उन्हें अपनी गहरी संवेदनाएं और हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनतः **राकेश - समता गोदिका**

संपादक, दैनिक शाबाश इंडिया ई-पेपर